

(2) अर्द्धचेतन (Subconscious) - अर्द्धचेतन मन से तात्पर्य मन के वैसे भाग से होता है जो न तो पूर्णतः चेतन होता है और न ही पूर्णतः अचेतन ही होता है। इसमें वैसी इच्छाएँ, विचार, भाव आदि होते हैं जो हमारे वर्तमान चेतन या अनुभव में नहीं होते हैं परंतु थोड़ा प्रयास करने पर वे हमारे चेतन मन में आ जाते हैं। अर्द्धचेतन को अन्य नामों से 'अकचेतन' तथा सुलभ स्मृति से भी जाना जाता है।

किस्कर (1985) के अनुसार "अकचेतन या अर्द्धचेतन में वैसे मनोवैज्ञानिक या मानसिक व्यटनाएँ होती हैं जो चेतन से हटकर होती हैं परंतु उन्हें स्मरण की प्रक्रिया द्वारा आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।"

इस परिभाषा से स्पष्ट है कि अर्द्धचेतन की मानसिक अनुभूतियों या व्यटनाओं से तो व्यक्ति अकगत नहीं रहता है परंतु थोड़ा-सा प्रयास करने पर उसका प्रत्याख्यान कर लेता है और इस तरह से उससे अकगत हो जाता है।

जैसे, किसी व्यटना से संबंधित तथ्यों को यदि याद करना चाहते हैं तो वह तत्काल याद नहीं पड़ता है परंतु बाद में थोड़ा-सा प्रयास करने पर हमें याद आ जाता है।

आलमाशी में एक किताब को हम ढूँढते हैं और नहीं मिलता है तो परेशान हो जाते हैं। फिर कुछ सोचने पर याद आती है कि 'अरे, वह किताब तो हम अपने मित्र को दे दिये थे। इस उदाहरण से यह स्पष्ट है कि व्यक्ति व्यटना से संबंधित तथ्य घानी किताब कहाँ होगी जैसे बातों को भूल नहीं गया था बल्कि वह चेतन से हटकर अर्द्धचेतन में चला गया था। यही कारण है कि वह उसे प्रयास कर जरूरत के अनुसार चेतन में ला पाया।

मनोविश्लेषणात्मक मनोविज्ञान में अर्द्धचेतन की कुछ विशेषताओं पर प्रकाश उला गया है जो निम्नांकित हैं -

(1) अर्द्धचेतन मन का एक ऐसा भाग है जो चेतन से बड़ा परंतु अचेतन से छोटा होता है।

(2) अर्द्धचेतन अचेतन तथा चेतन के बीच एक पुल का काम करता है। अचेतन क्षेत्र-चेतन में जाने वाला भाव, इच्छा, एवं विचार आदि अर्द्धचेतन होकर ही गुजरता है।

(iii) अर्द्धचेतन तथा चेतन के बीच का पर्व कमजोर होता है। शायद यही कारण है कि थोड़ा-सा प्रयास करने पर ही अर्द्धचेतन के भाव एवं कियार उस पर्व को काड़कर चेतन में आ जाते हैं।